ANUBHAVS

अपघात भय जाए, टले अकाल मौत !

© Copyright 2010, Manasamarthyadata.com

– फाल्गुनी पाठक

महाराष्ट्र सरकार एवं एमटीडीसी द्वारा आयोजित कोल्हापुर के रंकाला महोत्सव में मुझे १५ फरवरी २००७ को स्टेज शो करना था। १४ फरवरी को तकरीबन सुबह १० बजे मैं और मेरी सहेली ड्राईवर के साथ मेरी इनोवा कार से कोल्हापुर के लिए रवाना हुए। रास्ते में दोपहर के लगभग १२.३० बजे हमने पुणे में रुककर चाय-नाश्ता किया। इसके बाद यात्रा के दौरान मुझे और मेरी सहेली को पिछली सीट पर गहरी नींद लग गई। वैसे तो हमेशा मैं ड्राईवर के बगल वाली सीट पर ही बैठती हूँ, पर चूंकि इनोवा की पिछली सीट भी गिराकर अच्छी तरह से लेटा जा सकता है, अत: हम दोनों सहेलियां पीछे ही बैठ गईं। जब मेरी नींद खुली तब हमारी कार पुणे-सातारा एक्सप्रेस-वे पर १२० कि.मी. की रफ्तार से दौड रही थी और अचानक.....मैंने क्या देखा ? हमारे ड्राईवर को झपकी लगी है और सामने से एक एस.टी. बस तेज रफ्तार से आ रही है। मैंने तुरन्त ड्राईवर को सावधान किया। उसने जोर से ब्रेक लगाया तो हमारी कार थोडीसी बाईं ओर मुड गई और एस.टी. बस से आमने-सामने टकराने की बजाय उसके पिछले हिस्से से जा टकराई। वह टक्कर इतनी जोरदार थी कि हमारी कार के अंजरपंजर ढीले हो गए। इंजिन तो पूरी तरह से नाकाम हो गया था और आगे के दोनों पहिए टूट गए थे। आगे की कांच भी चकनाचूर हो गई थी और इंजिन में से बाफ और धुआं निकल रहा था। एस.टी. बस की बाईं तरफ का भी ऐसा ही बुरा हाल था, पर अचरज की बात तो यह है कि हम तीनों को और बस के मुसाफिरों में से किसी को भी खरोंच तक नहीं आई थी।

यह सबकुछ पलक झपकते ही हो गया था और हम सभी अचम्भित हो गए थे। कुछ देर तक तो ऐसे ही बैठे रहे। वहां पर इकट्ठा हुए गांव वालों ने कार से धुआं निकलते देखा तो हमें जल्दी कार से उतरने के लिए कहा । हम तीनों काँप रहे थे और हमारी बोलती बंद हो गई थी। हमें ठीकठाक देखकर गांववालों को आश्चर्य हो रहा था। उनकी नजरें मानों हम से पूछ रही थीं, ''आप बच कैसे गए?'' इतने में वहाँ पर पुलिस आ पहुँची और पूछताछ शुरु हो गई। वे हमें थाने ले जाना चाहते थे, पर हमारे पास जो स्टेज शो का पूरा सामान था उसे कार से निकालना निहायत जरुरी था। हम उसी चिंता में थे कि सामने से सफेद शर्ट और सिलेटी पैंट पहने हुए एक सज्जन हमारे पास आकर रुके। वे हमसे पूछताछ करने लगे कि, हम कहाँ से आए हैं और कहाँ जा रहे हैं, पर हम उन्हें बताने में हिचकिचा रहे थे। इस पर वे बोले, ''डरने की कोई बात नहीं है। मैं भी बापूभक्त हूँ। गाडी पर बापूजी का फोटो लगा देखा तो आपकी सहायता करने चला आया।'' पहली बार मन को धीरज मिला।

उस अनजान आदमी ने तुरन्त भाडे की मारुति वैन की व्यवस्था की। फिर हमारा सारा सामान ध्यान से उस वैन में स्वयं रखा। मैंने सहेली को सामान के साथ रवाना करके, मैं और ड्राईवर डरते हुए ही पुलिस थाने गए। हमने पहले वहां से मुम्बई में पू. समीरदादा को फोन से संदेशा भेजा। तुरन्त श्री समीरदादा का फोन आया और उन्होंने हमारा बहुत अच्छी तरह से धीरज बंधाया और कहा कि तुरन्त मैं सातारा और वाई केंद्र के कार्यकर्ताओं को आपकी सहायता के लिए भेजता हूं। इससे हमें बहुत आधार मिला।

दादा के कथनानुसार अगले बीस मिनटों में ही सातारा और वाई केंद्रों के कार्यकर्ते वहाँ आ पहुंचे। उन्होंने हमारा धीरज बंधाया। केस के कागजात भी ऐसे बने कि उनकी वजह से हमारी गाडी को हुए नुकसान का हमें बडे पैमाने पर मुआवजा मिलने की संभावना बन गई। जबरदस्त टक्कर की वजह से मेरी बिगडी हुई गाडी को दूसरे दिन ट्रक से मुम्बई भेजने की व्यवस्था भी की गई। ड्राईवर को आराम हेतु वाई के एक कार्यकर्ता के घर भेजकर मैं स्टेज शो के लिए कोल्हापुर चली गई।

ऐसे कठिन समय में मुम्बई से पू. समीरदादा के ऑफिस के कार्यकर्ता निरंतर मुझसे संपर्क बनाए हुए थे। १५ फरवरी को हमारा स्टेज शो जबरदस्त हिट हुआ। शो के पश्चात शो के व्यवस्थापकों से बातचीत के वक्त उन्होंने बताया कि संपूर्ण शो के दौरान तीन सफेद कबूतर स्टेज के ऊपर बैठे रहे। इतनी जोर की आवाज एवं चकाचौंद रोश्नी बावजूद भी वे कबूतर वहीं बैठे रहे। हादसे के बाद आया हुआ सफेद शर्ट एवं सिलेटी रंग की पैंट पहना हुआ इन्सान और वे तीन कबूतर...मुझे निशानी मिल गई। मेरे अनजानें, पर निरंतर मेरे साथ रहनेवाले सद्गुरु परमपूज्य श्री अनिरुद्ध बापूजी को मेरे कोटी कोटी प्रणाम।

ANUBHAVS

© Copyright 2010, Manasamarthyadata.com

manasamarthyadata.com